गिरिराज सिंह
GIRIRAJ SINGH

ग्रामीण विकास तथा पंचायती राज मंत्री
भारत सरकार
कृषि भवन, नई दिल्ली
MINISTER OF
RURAL DEVELOPMENT AND PANCHAYATI RAJ
GOVERNMENT OF INDIA
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

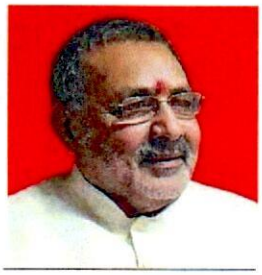

संदेश

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनायें!

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। यह करीब 11वीं शताब्दी से ही राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। उस समय भले ही राजकीय कार्य संस्कृत, फारसी, अंग्रजी में होते रहे हों, परन्तु सम्पूर्ण राष्ट्र में आपसी सम्पर्क, संवाद-संचार, विचार-विमर्श, जीवन-व्यवहार का माध्यम हिन्दी ही रही है। चाहे वो पत्रकारिता हो यास्वाधीनता संग्राम हो, हर जगह हिन्दी ही जनता के विचार-विनिमय का साधन रही है।

अतीत के महापुरुषों जैसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती, राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी जैसो ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से ही सम्पूर्ण राष्ट्र से सम्पर्क किया और राष्ट्र हित में अपने मनोरथ हासिल कर पाए। जैसे-जैसे भाषा का विस्तार क्षेत्र बढ़ता गया, यह उतनी ही समृद्धशाली बनती गई और भाषा के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने लगी। उसके बाद साहित्यिक भाषा के क्षेत्र में इसका विकास हुआ फिर समाचार-पत्रों में 'हिन्दीपत्रकारिता' का विकास हुआ।

इसी कारण आजादी के पश्चात 14 सितम्बर, 1949 को संविधान-सभा द्वारा बहुमत से 'हिन्दी' को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया गया था। इसी उपलक्ष्य में हम प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मानते हैं। इसी के तत्वाधान में इस वर्ष भी हम हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन कर रहे हैं। हिन्दी पखवाड़ा एवं इसके तहत विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन का मूल उद्देश्य सभी अधिकारिगणों/कर्मचारियों को हिन्दी के प्रयोग के बारे में प्रोत्साहित करना एवं हिन्दी की समृद्धशाली प्रकृति तथा सहज भावपूर्ण अभिव्यक्ति के बारे में ओतप्रोत भी करना है।

अतः इस अवसर पर मैं चाहूँगा कि आप सभी मंत्रालय के विभिन्न पत्राचारों अथवा किसी भी प्रकार के लेखन कार्य हेतु अधिकाधिक हिन्दी का ही प्रयोग करें। जब तक आवश्यक न हो, मूल दस्तावेज/मसौदा अंग्रेजी में तैयार करने से बचें, अधिकाधिक हिन्दी में ही तैयार करें। इस हेतु हिन्दी अधिकारियों की भी सहायता ली जा सकती है । मेरा यह विशवास है कि इस दिशा में लगातार प्रयास करते रहने से आप निश्चित रूप से हिन्दी भाषा के आपके ज्ञान में उत्तरोत्तर प्रगति होती रहेगी। इस प्रकार हिन्दी के राजकार्यों में प्रयुक्त होना सही मायनों में सच साबित होगा। इस प्रकार आपके ये प्रयास राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

'हिन्दी दिवस' के अवसर पर मैं चाहूँगा कि सभी अधिकारी/कर्मचारी हिन्दी पखवाड़े में पूरे उत्साह के साथ भाग लें एवं इसके निहित उद्देश्यों को प्राप्त करने में अपना योगदान दें।

(गिरिराज सिंह)

Office : 'G' Wing, Ground Floor, Krishi Bhawan, New Delhi-110001, Tel.: 011-23383548, 23782373, 23782327, Fax : 011-23070309
Resi. : 27, Lodhi Estate, New Delhi, Ph.: 011-24626783, 24655677